ॐ श्री देवपुरीजी महादेव का परिचय

कैलाशपति ने कैलाश से हिमालय बद्रीनाथ धाम की ओर प्रस्थान किया। वहाँ दुर्गम पहाड़ों के बीच अपने श्री शम्भू पंच अटल अखाड़े में पहुँचे, वहाँ पर परम तपस्वी, साक्षात् अलख पुरुष श्री अलखपुरीजी महाराज से मिले। दोनों ईश्वरीय विभूतियों का मिलन विश्व के लिए वरदान रूप था। भगवान्शिव ने श्री अलखपुरीजी से कहा कि मैं कुछ समय के लिए संसार में दु:खी जीवों के उद्धार के लिए प्रकट होना चाहता हूँ सो आप आज्ञा देवें। आप तो जगतगुरु हैं, मैं भी गुरु ही मानता हूँ। इस पर महायोगी श्री अलखपुरीजी महाराज ने मधुर मुस्कान के साथ कहा, कि आप तो स्वयं शिव हैं, समर्थ हैं, सर्वशक्तिमान हैं, जो चाहे सो कर सकते हैं, आप देवाधिदेव महादेव हैं। आज से आपका नाम श्री देवपुरीजी महादेव होगा।

(जैसा कि श्री महाप्रभुजी ने अपने "अनुभव प्रकाश" में पृष्ठ नं. 11-12 पर लिखा है।)

चौपाई—

श्री अलखपुरीजी अवधूत अनादि। अटल अखाड़े अनहद गादी।।
उन मून सेव श्री देवपुरीजी साजे। ज्ञान वैराग्य दियो है ताजे।।

दोहा—

हंस अनादि आत्मा श्री अलखपुरीसा निर्वाण।
श्री देवपुरीजी महादेव श्री दीप हरि दर्शन जाण।

उसके बाद श्री देवपुरीजी महादेव राजस्थान के आबू पर्वत के लिए प्रस्थान कर गये। वहाँ पर अदृश्य रूप में रहने लगे। उस समय भारत में अंग्रेजों के संरक्षण में राजाओं का राज था।

प्रकाम्य सिद्धि का चमत्कार

स्वतन्त्रता से पूर्व राजाओं के शासनकाल में माउन्ट आबू में एक अंग्रेज रेजीमेण्ट आफीसर रहा करता था। वहाँ पर वह एक हिन्दू धर्म का कट्टर विरोधी अंग्रेज रेजीमेण्ट बनकर आया था। एक दिन वह संध्या को नक्की झील (तालाब) पर टहलने आया। उस समय झील के किनारे श्री दूलेश्वर महादेव के मन्दिर में बाजों के साथ आरती तथा पूजा हो रही थी।

उस अंग्रेज को यह सब देखकर क्रोध आया। उसने वहाँ के साधू तथा ब्राह्मणों को एकत्रित कर डांटते हुए कहा, "तुम लोग ये शोर-शराबा क्यों कर रहे हो? क्या तुम्हारा भगवान्सो गया है या बहरा हो गया है? तुम इन बाजों को जोर-जोर से पीटकर शहर की शान्ति भंग कर रहे हो, इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ कि यह सब ढकोसला बन्द कर दो। यदि वास्तव में तुम्हारे भगवान्शिव इन बाजों से प्रसन्न होते हैं तो स्वयं मुझे कहें कि इन्हें बजाने दो। तभी मैं तुम्हें यह सब कुछ करने की आज्ञा दे सकता हूँ, अन्यथा मैं तुम्हें बाजे बजाने की आज्ञा कभी नहीं दूंगा। जो कोई मेरी आज्ञा के बिना बाजा बजायेगा तो मैं उन्हें दण्ड दूंगा।" ऐसा कहकर बहुत से साधुओं को जेल में डाल दिया।

मूर्ख अंग्रेज अफसर के इस ऐलान से सभी साधू ब्राह्मण चिन्ताग्रस्त हो गये। अंग्रेजों का शासन होने के कारण वे उनका विरोध भी नहीं कर सकते थे। सभी सन्तों व ब्राह्मणों ने मन ही मन हरि स्मरण किया, "हे कृपानिधान कैलाशपति, आप स्वयं जब तक इस अंग्रेज अफसर को बाजा (नगाड़े, झालर आदि) बजाने का आदेश नहीं देंगे तब तक हम लोग अन्न, जल ग्रहण नहीं करेंगे। यह हमारा दृढ़ संकल्प है।" साधू-सन्तों के इस दृढ़ संकल्प का पता जब उस अंग्रेज अफसर को चला तब उसने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि इन लाल वस्त्रधारी पादरियों (साधुओं) को विष देकर समाप्त कर दो। (ताकि न रहे बांस न बजे बांसुरी)। उस समय आबू के गहन पर्वतों में भगवान्श्री देवपुरीजी महादेव अदृश्य रूप में विराजते थे और कभी-कभी गौ सेवार्थ प्रकट होते थे। उस समय किसी ग्वाले की गायें चराते हुए श्री देवपुरीजी महादेव को साधुओं की वेदना-युक्त आवाजें सुनायी पड़ीं। यह पुकारें साधुओं व भक्तों की थी आपने पुकार सुनते ही दिव्य दृष्टि से देखा कि साधू एवं ब्राह्मण भक्त जन दो-तीन दिन से भूखे व प्यासे अनशन पर बैठे हैं। वह जेल में उनसे चक्कियाँ चलवाते हैं और दु:खी व दीन भाव से मुझे पुकार रहे हैं एवम् साधु, ब्राह्मणों को एक अंग्रेज अफसर विष तेजाब देकर मारना चाहता है, मेरे बिना उनकी रक्षा कौन करेगा? मुझे तत्काल वहाँ पहुँचना चाहिये, उनको बचाना चाहिए, ताकि देवपुरीजी महादेव की अद् भुत शक्ति का आभास उस अंग्रेज अफसर को हो सके, जो कि अज्ञानवश ऐसा कर रहा है। उसको वहाँ चलकर ज्ञान देना चाहिए। उस समय गायों का ग्वाला वहाँ नहीं था। श्री देवपुरीजी महादेव ने ॐकार ध्वनि से चार सफेद शेरों को बुलाया। तत्काल चारों शेर वहाँ आ गये व सात परिक्रमा देकर, सिर झुकाकर आपके समक्ष दूर-दूर खड़े हो गये और देवपुरीजी महादेव की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। आपने फरमाया कि गायों का पहरा करों वो कहीं चली न जायें। जैसे ही शेरों ने अपने स्वामी की आज्ञा पायी तत्काल चारों शेर गायों की सुरक्षार्थ चारों तरफ दूर-दूर खड़े हो गये। उस वक्त अचानक ही आबू के पर्वतों से स्वयं शिव योगीराज श्री देवपुरीजी महादेव वहाँ पर प्रकट हो गये। योगीराज सीधे ही उस अंग्रेज अफसर के बंगले पर गये। उन्होंने गर्जना भरे स्वर में उस अंग्रेज अफसर को ललकारा, "अरे ओ अंग्रेज अफसर बाहर आकर देख। मैं एक लाल वस्त्रधारी पादरी तुम्हारे बंगले पर आ गया हूँ, अब लाओ सब तुम्हारे जहर व तेजाब की बोतल।"

योगीराज की इस ललकार से एक बार तो उस अंग्रेज अफसर के पाँवों के नीचे से जमीन खिसकने लगी। पर उसने स्थिति को संभालते हुए गुरुदेव के समक्ष तेजाब की बोतल रख दी। शिव योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने बोतल उठाकर एक ही घूंट में खाली कर दी। उनके शरीर में उसका कोई भी असर नहीं हुआ। योगीराज बोले, "तुम्हारे पास और कितनी बोतलें हैं? मेरा नशा अधूरा है। शीघ्र बोतलें लाओ।" अंग्रेज अफसर एक-एक कर सात बोतलें गुरुदेव के हाथों में थमाता/पकड़ाता रहा और गुरुदेव एक के बाद एक सभी बोतलें खाली करते रहे। तब योगीराज ने तेजाब की समस्त बोतलें खाली कर डालीं। पूरा तेजाब पी गए तब अंग्रेज अफसर आश्चर्यचकित रह गया।

इस अद्भुत लीला से वहाँ खड़े सभी लोग दंग रह गये। तब उस अंग्रेज अफसर ने हाथ जोड़कर श्री योगीराज देवपुरीजी महादेव से निवेदन किया कि हे देव, अब हमारे पास तेजाब की बोतलें नहीं हैं। अंग्रेज के मना करने पर योगीराज ने उन सातों बोतलों को तोड़कर, काँच को भी पापड़ की तरह चबाकर खा लिया और अपने प्राणों को ब्रह्म रन्ध्र में चढ़ा दिया। उस अंग्रेज अफसर ने देखा कि योगीराज की सांस एवं नाड़ी बन्द हो गयी है। निश्चित ही यह पादरी मृत्यु लोक को प्राप्त हो गया है। ऐसा सोच कर उस अंग्रेज अफसर ने अपने नौकरों को बुलाकर योगीराज को बाहर करने का आदेश दिया। आदेश पाकर नौकर धीरे-धीरे योगीराज की तरफ बढ़ने लगे। तभी अचानक योगीराज मुस्कुराते हुए बैठ गये। मधुर मुस्कुराहट से अंग्रेज की तरफ देखते हुए बोले, "कौन मर गया? मैं तो आराम कर रहा था।" ऐसा कहते हुए अंग्रेज अफसर का हाथ पकड़कर योगीराज उसे नक्की झील के अथाह जल की सतह पर घसीट कर ले गये। महायोगीराज तो जल की सतह पर भी वैसे ही चल रहे थे, जैसे पृथ्वी पर चल रहे हों, परन्तु वह अंग्रेज कभी डूबता कभी तैरता। इस तरह उसकी विचित्र स्थिति थी। अथाह पानी के बीच ले जाकर उस अंग्रेज अफसर से कहा, "बोल तू क्या चाहता है? तू इन साधुओं को तंग करता है। इन्हें कहता है कि स्वयं शिव के आकर कहने पर ही पूजा में बाजे, नगाड़े इत्यादि बजाने की आज्ञा दूंगा। मैं स्वयं शिव तेरे समक्ष हूँ, अब तू क्या चाहता है?" तब उस अंग्रेज ने गिड़गिड़ाते हुए पुकारा कि, "श्री देवपुरीजी महादेव बचाओ।" इस प्रकार पाँच बार कहते ही श्री देवपुरीजी महादेव ने मधुर मुस्कुराहट से कहा यही डूबने से बचने का सही मंत्र है—श्री देवपुरीजी महादेव बचाओ। इसी मंत्र से भवसागर के किसी दु:ख सागर में डूबते बच जायेगा। यह विश्व के वरदान अमृत वचन सुनते ही अंग्रेज धन्य हो गया और वह श्वासों श्वास इसी मंत्र की धुन में मस्त हो गया और महातपस्वी के कर-कमल के स्पर्श से ही शुद्ध पावन हो गया।

उसका जीवन बदल गया जैसे पारस के छूने से लोहा सोना हो जाता है, वैसे ही अंग्रेज के अन्त:करण में दिव्य विचार प्रकट हो गये और अंग्रेज ने श्री देवपुरीजी महादेव से वरदान मांगा, "हे दयाल! हम लोगों में विद्या, कला, अन्न, धन आदि की कोई कमी नहीं है, लेकिन सच्चा योग व ब्रह्म ज्ञान, सच्ची शान्ति आदि का अभाव है। इसलिए आप हम अंग्रेजों के लिए कृपा कर पधारें, या अपने दरबार का सच्चा सैनिक एवं दिव्य पुरुष एवं महान् सन्त हमारे देशों में भेजने

की कृपा करें।" अंग्रेज की यह प्रार्थना सुनकर सकल कामना सिद्धि वरदाता, करुणामय कैलाशपति ने कहा—"तथास्तु" ऐसा ही होगा और कुछ समय बाद साक्षात् परमात्मा अमृत सागर भगवान् श्री दीपनारायण महाप्रभु का अवतार होगा। वह आप लोगों के लिए एवम् सम्पूर्ण विश्व के लिए एक महान्ज्योतिर्मय दिव्य पुरुष सप्तऋषियों में से एक ऋषि अथवा अन्य कोई महान् विभूति सत्यलोक से पृथ्वी पर उतारेगा (प्रकट होगा) वही दिव्य पुरुष विश्व दीप परमात्मा अमृत मय दिव्य शांति संदेश को योग वेदान्त द्वारा समस्त विश्व को शान्ति का सन्देश देने आयेंगे। उनके साथ मैं अदृश्य रूप से रहूंगा। विश्व दीप का प्रकाश सर्वत्र अन्दर व बाहर परिपूर्ण ही है, लेकिन उसकी वाणी में विशेष रूप से प्रकट रहेगा जो भ्रम अंधेरे को दूर करेगा और आत्मप्रकाश व आत्म शान्ति प्रदान करेंगे। ऐसा वरदान देकर भगवान्शंकर ने उस अंग्रेज को किनारे पर छोड़ दिया। सबसे पहले उस अंग्रेज ने क्षमा मांगते हुए कुछ भेंट देकर साधुओं को जेल से विदा किया। हजारों भक्त , साधू, ब्राह्मण उस नक्की झील के किनारे पहले से ही खड़े थे। उन सभी ने करुणानिधान कैलाशपति शिव की जय-जयकार की ध्वनि-नाद किया एवम् हर्षित हुए। सभी भक्त एवम् साधूजन महाशिव योगीराज श्री देवपुरीजी के चरण स्पर्श करना चाहते थे, परन्तु योगीराज तो झील की सतह पर से ही दर्शन एवं आशीर्वाद देते हुए अदृश्य हो गये, जहाँ गायें थीं, वहाँ जाकर शेरों से कहा, "तुम्हारी सेवा पूर्ण हो गई है, अपने-अपने जगह चले जाओ।" तब शेर सिर झुका के चले गये।

(प्रकाम्य सिद्धि द्वारा योगी पानी की सतह पर चल सकता है। इस प्रकरण में योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज की प्राकाम्य सिद्धि को ही बताया गया है।)

अघौरी साधुओं को सन्मार्ग पर लाना

आबू पर्वत की कन्दराओं में पहुँचना बिरले व्यक्तियों की ही सामर्थ्य की बात मानी जाती है। योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने अणिमा सिद्धि द्वारा छोटे बालक का रूप धारण किया। उसी समय एक गुफा में से चार अघौरी साधु निकले। इस छोटे बालक को देखकर वे कहने लगे कि आज का मुहूर्त बहुत ही शुभ है, आज तो अपना भोजन स्वयं अपने पास आ रहा है। ऐसा विचार कर वे उस बालक के पास पहुँचे और उसे पकड़ने लगे। साधुओं के विचित्र व्यवहार को देखकर बालक ने कहा, "आप लोग क्या कर रहे हैं? मुझ जैसे बालकों पर तो आप जैसे साधु-सन्तों की कृपा होनी चाहिये।" इस पर अघौरी साधु बोले, "हम कृपा नहीं जानते हैं, हम तो तुम्हें पकड़ कर खायेंगे।" इस पर बालक हँसते हुए बोला, "आप मुझे नहीं खा सकते।"

"क्यों नहीं खा सकते? क्या तुम भगवान् हो?" साधुओं ने व्यंग करते हुए पूछा तो उस बालक ने जवाब दिया, "हाँ मैं राम हूँ।" बोलो तुम लोगों को क्या चाहिये? बालक के इस आत्मविश्वासपूर्ण उत्तर से एक बार तो साधु स्वयं घबरा गये।

फिर भी संभलते हुए उन्होंने पूछा, "अगर तुम राम हो तो हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे। अगर इस पहाड़ और झाड़ी में से अपने आप ही 'राम-राम' की ध्वनि निकले तो हम तुम्हें राम मान लेंगे।" साधुओं की इस बात को मानते हुए उस बालक ने झाड़ी और पहाड़ की ओर देखा और उनसे कहने लगा, "हे पहाड़ और झाड़ी आप जोर से बोलिए 'राम-राम'। तभी एक चमत्कार हुआ और चारों ओर से ध्वनियाँ एवम् प्रतिध्वनियाँ सुनाई देने लगीं और "राम-राम" से सारा सौरमण्डल गूँजने लगा। इस लीला को देखकर चारो अघौरी समझ गये यह कोई महान्ईश्वरीय विभूति है। हम चारों पतितों को पावन करने के लिए ही प्रकट हुए हैं। आज का दिन हमारे लिए बहुत ही शुभ है। ऐसा विचार करते हुए चारों अघौरी साधु उस बालक के चरणों में गिर पड़े। वह बालक अपनी महिमा सिद्धि द्वारा पुन: योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज के रूप में परिवर्तित हो गये। अघौरी साधु विस्मयजनक स्थिति में आ गये। उन्होंने योगीराज को साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया और निवेदन करने लगे, "हे प्रभु! हम लोग भटक रहे हैं, आप कृपा करके सत्य मार्ग बतलाइये।" साधुओं की इस प्रार्थना को सुनकर योगीराज ने आशीर्वाद देते हुए कहा, "आप लोग समस्त पाप कार्य छोड़कर गिरनार पहाड़ में जूनागढ़ चले जावें, वहाँ आपको एक पवित्र गुफा मिल जायेगी। उस गुफा में आसन लगाकर ॐकार मंत्र सहित चिन्तन कीजियेगा। तब आप लोगों को आत्मशक्ति मिलेगी।" ॐकार की जप की विधि योगीराज साधुओं को समझाकर स्वयं अचानक ऊंचे पहाड़ पर चढ़ गये।

इसके पश्चात अघौरी साधू परमहितकारी, परम कृपासागर का वचन शिरोधार्य करके गिरनार पहाड़ पर चले गये। वहाँ पर योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज की कृपा से पवित्र जीवन व्यतीत करते हुए, वे थोड़े समय में ही सिद्धि पुरुष हो गये।

(लघिमा सिद्धि के द्वारा रूई के समान हल्के होकर चाहे जहाँ उड़ सकते हैं।)

परम योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने विचार किया कि संसार में भूले-भटके जीवों को सत्य मार्ग दिखलाना अति आवश्यक है। ऐसा विचार कर आप माउण्ट आबू से रवाना होकर अजमेर के पास नसीराबाद में, जहाँ अंग्रेजों की छावनी थी, पधारे। वहाँ पर अंग्रेजों को आपने अनेकानेक चमत्कार दिखलाये। इन आश्चर्यजनक चमत्कारों से प्रभावित होकर अंग्रेजों ने योगीराज को रुपयों की एक थैली भेंट की। कुछ समय वहाँ पर आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करने के बाद आप राजस्थान के सीकर जिले में कैलाश गाँव में पधारे।

गाँव कैलाश में आश्रम की स्थापना

योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने कैलाश पहुँचकर गाँव वालों के समक्ष आश्रम बनाने की इच्छा प्रकट की। गाँव वालों ने अपना सौभाग्य माना। समस्त गाँव वाले योगीराज के पास आये और कहने लगे, "गुरुदेव, यह तो हमारा

अहोभाग्य है कि आपने हमारे गाँव में आश्रम बनाने की इच्छा प्रकट की। हम लोग हाथ जोड़कर निवेदन करते हैं कि आप आज्ञा करें। आपके आदेशानुसार हम व्यवस्था कर देंगे। हमें सेवा करने का शुभ अवसर प्रदान करें।" योगीराज ने वहाँ पर अति सुन्दर आश्रम बनाया। नसीराबाद छावनी से योगीराज जो कुछ भी धन लेकर आये थे वह सम्पूर्ण धन उस आश्रम में लगा दिया। यह रमणीक आश्रम दो मंजिल का बना। वहाँ के प्रसिद्ध कारीगरों ने इसे बनाकर अपनी कला का अति उत्तम संगम प्रस्तुत किया। चारों तरफ से हवादार, प्रकाशयुक्त बने इस आश्रम के बीच में वेद विधियुक्त एक विशाल तथा सुन्दर हवन कुण्ड स्थापित किया जिसमें अखण्ड हवन चलता ही रहता था। उस आश्रम में स्वयं शिवरूप योगीराज ने रामायण की कथा आरम्भ की। आपकी कथा अतिरोचक व मनोहर होती थी।

गाँवों के हजारों नर नारी कथा सुनने आते थे। आश्रम में हजारों आदमियों का भांति-भांति का भोजन बनता था, परन्तु किसी को यह ज्ञात नहीं होता था कि इस भोजन के लिए सामग्री कहाँ से आती है? ऐसा भी कहा जाता है कि साक्षात् रिद्धि-सिद्धि तथा कुबेर योगीराज की सेवा में तत्पर रहते। लोगों की भीड़ का ताँता बना ही रहता था। इस प्रकार लगातार तीन वर्ष तक ज्ञानामृत का आनन्द उस आश्रम में योगीराज द्वारा बरसता ही रहा। अब आपके मन में विचार आया कि ये सब लोग मेरे पास मुक्ति व आत्मज्ञान के लिए नहीं आते हैं। ये तो केवल मुफ्त का भोजन करने और राग-रागिनी सुनने ही आते हैं। उन्होंने देखा कि भैंस के आगे भागवत् पढ़ने से कोई फायदा नहीं। ऐसा विचार कर योगीराज ने एक दिन आश्रम से बाहर निकलकर जोर-जोर से आवाज लगानी शुरू कर दी, "सभी भक्त गण आश्रम से बाहर निकलो। देखो आश्रम की ऊपर वाली मंजिल गिरने वाली है।" तभी योगीराज ने आश्रम की ऊपर वाली मंजिल की ओर त्राटक दृष्टि से देखा और देखते ही देखते सबके सामने आश्रम का भाग फटकर गिरने लगा तथा थोड़ी ही देर में मलबे के ढेर के रूप में परिवर्तित हो गया। तत्पश्चात् आपने एक ऐसी आवाज लगाई, जिसको सुनकर हर प्रकार के विषैले सर्प वहाँ पर एकत्रित हो गये। योगीराज इन विषैले सर्पों को पकड़कर मनुष्यों पर फेंकने लगे। इस विचित्र लीला से लोग भयभीत होकर वहाँ से भागने लगे। लोग कहने लगे "महात्माजी को अचानक यह क्या हो गया? कहीं ये पागल तो नहीं हो गये।" ऐसा कहते-कहते सभी अपने-अपने घर चले गये। इतनी बड़ी घटना हो जाने के पश्चात् भी किसी को शारीरिक चोटें नहीं आयी।

(यह आश्रम श्री कैलाश गाँव में एक खण्डहर के रूप में मौजूद था जिसका पुनर्निर्माण विश्वगुरु परमहंस श्री स्वामी महेश्वरानन्द्जी द्वारा सन्१९९० में करवा दिया गया है।)

नाथ योगी को शान्ति प्रदान करना

आश्रम के पीछे की ओर एक नाथ योगी नवरात्रि अनुष्ठान कर रहा था। वह देवी की मूर्ति के आगे जप कर रहा था। उसके पास जाकर श्री योगीराज ने कहा, "हे नाथ बाबा, तुमने कान तो झड़वाये, परन्तु मन माया से नहीं छुड़ा सके। इस

माया रूपी देवी से तू क्या चाहता है? जो चाहे सो मुझ से मांग ले। मैं तुम्हें सर्वस्व दे सकता हूँ।" तब नाथजी महाराज इन अद्भुत वचनों को सुनकर दंग रह गये। उन्होंने चुपचाप वहाँ से प्रणाम करके नौ-दो ग्यारह होने में अपना सार समझा। किसी भी व्यक्ति को पता नहीं चला कि नाथजी महाराज कहाँ चले गये?

इस घटना के तीन दिन पश्चात् योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने प्रकाश्य सिद्धि (दिव्य दृष्टि) द्वारा यह जान लिया कि नाथ बाबा लोहार्गल तीर्थ मेले में उदास मन से बैठे हैं। सिद्धि बल से ही श्री योगीराज अचानक ही नाथ बाबा के समक्ष प्रकट हो गये। उन्होंने नाथ बाबा को आशीर्वाद दिया, "तुम चिन्ता मत करो। मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ। जब-जब भी तुम इच्छा करोगे तब-तब मेरे दर्शन पाओगे।" योगीराज के इस आशीर्वाद से नाथ बाबा अति प्रसन्न हुए और उनके चरणों में गिर पड़े। ज्योंही नाथ बाबा ने ऊपर दृष्टि उठायी तो वहाँ योगीराज को नहीं पाया। योगीराज तो अदृश्य हो गये थे। इस लीला से खुश होकर नाथजी महाराज ने अपने मन में योगीराज की मूर्ति धारण कर ली, जिससे उन्हें अखण्ड शान्ति प्राप्त हुई।

कुत्तों और सर्पों को नियन्त्रण में रखना

परमसिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज, गाँव कैलाश पधारे वहाँ पर आप अवधूत अवस्था में रहने लगे। आप हर वक्त पाँच-सात कुत्तों व सात-आठ सर्पों से घिरे रहते थे। मनुष्यों को अपने नजदीक भी नहीं आने देते थे। योगीराज अपने कुत्तों को 'रईस' नाम से पुकारते थे। ऐसा भी कहा जाता है कि योगीराज इन कुत्तों को अपना तकिया बनाकर सोते थे। यहाँ तक कि बैठने के लिए सहारा भी कुत्तों का ही लिया करते थे। योगीराज की आज्ञा पाकर ही कुत्ते अपनी दिनचर्या बनाते थे। योगीराज की आज्ञा पाकर ये कुत्ते शिकार भी कर लिया करते थे। जब कभी योगीराज का मन कुछ समय मनोरंजन करने का होता तो आप कुत्तों के साथ विचित्र लीला करते थे। कभी-कभी किसी एक कुत्ते के ऊपर बहुत से कपड़ों को लोहे के तारों से बांधकर उस पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा देते थे। आग की लपटों युक्त उस कुत्ते को भागते हुए देखकर आप ठहाका लगाते और हंसते हुए कहते, "देखो लंका जल रही है।" उस दृश्य से लोग उस कुत्ते के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहते थे, "यह साधु इस निर्दोष कुत्ते को जला रहा है।" लेकिन लोगों को क्या मालूम कि इस कुत्ते का तो बाल भी नहीं जल रहा है। कभी-कभी योगीराज बीहड़ जंगलों में जाकर ऐसी आवाज लगाते कि सुनकर सभी सर्प इकट्ठे हो जाते थे और अपने गुरुदेव के वचनामृत सुनने के लिए फन फैलाकर और कुण्डली मारकर बैठ जाते। उस समय आप इन सर्पों को निर्देश देते कि अमुक-अमुक सर्प को आश्रम की इस-इस सीमा में घूमने की छूट है। आप अपनी सीमा का उल्लंघन न करें। अगर कोई सीमा का उल्लंघन करेगा तो उसे दण्ड मिलेगा। ऐसा कह करके आप स्वयं बाहर चले जाते। कभी-कभी कोई सर्प अपनी सीमा का उल्लंघन करता तो आप उन्हें कठोर दण्ड देते। दो सर्पों की पूंछों को आपस में सुई और धागे से सी देते थे। उन सर्पों की कुण्डलियां बनाते देख आप उन्हें सुधारने की लिए आशिर्वचन

कहते। दोषी सर्प योगीराज से दया की भीख मांगते, तब योगीराज उन सर्पों को छोड़ देते। उन्हें समझाते थे कि वे भविष्य में इस गलती को दोहराने का साहस नहीं करें।

अद्भुत घुड़सवार

श्री योगीराज के पास एक अच्छा घोड़ा था। योगीराज स्वयं एक अच्छे घुड़सवार थे। आप अपने घोड़े को बहुत तेज दौड़ाते थे। आप दौड़ाते हुए घोड़े पर कई कलाबाजियां करते थे। बारी-बारी से चढ़ते एवम् उतरते, दौड़ते हुए घोड़े पर खड़ा होना। घोड़े के पेट के नीचे होकर पुन: पीठ पर आना आदि उनके लिए सहज आसानी थी। कई बार योगीराज जब घोड़े की पीठ के नीचे छिप जाते थे, तब लोग आश्चर्य करते कि घोड़ा, बिना सवार के जा रहा है। बिना सवार का घोड़ा समझकर लोग उसे पकड़ने दौड़ते। इतने में अचानक ही योगीराज पीठ पर बैठ जाते। लोग इस अद्भुत कलाबाजी से दांतों तले अंगुली दबाया करते थे। कई बार आप घोड़े को आज्ञा देते कि जाओ इन-इन खेतों में चरकर इस समय तक वापस आ जाना। घोड़ा योगीराज के आदेश का एक मनुष्य की भांति पालन करता।

लड़की को जीवनदान

एक बार गाँव कैलाश में मीणा जाति के लोगों में विवाह था। विवाह के उत्सव में सभी मग्न थे। तभी अचानक हर्ष का वातावरण शोक में बदल गया। वहाँ पर "खेती" नामक लड़की की मौत हो गयी। शोकाकुल वातावरण में यहाँ उपस्थित सभी लोग रोने लगे। दु:ख की इस घड़ी में वहाँ पर परम पूजनीय योगीराज पधारे। और वहाँ पर सभी लोगों को बिलखते देखकर कारण जानना चाहा।

जब लोगों ने गुरुदेव का ध्यान उस मृत लड़की की ओर किया तब योगीराज उस मृत बाला के पास गये। कुछ समय तक मौन रहने के बाद योगीराज बोले, "यह लड़की मृत नहीं है। आप लोग व्यर्थ ही रो रहे हैं।" ऐसा कहकर योगीराज ने उस लड़की के कान में कुछ कहा। थोड़ी देर बाद लड़की अंगड़ाई लेते हुए बैठ गयी। यह अद्भुत चमत्कार देखकर वहाँ पर उपस्थित सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए। सभी ने योगीराज की जय-जयकार से आसमान गुंजा दिया।

चिड़ियों को जीवनदान

एक शिकारी बहुत सी चिड़ियों का शिकार करके, उनको टोकरी में भरकर आश्रम (गाँव-कैलाश) के समीप होकर अपने घर लौट रहा था। तभी उस शिकारी को देखकर योगीराज ने उसे रोका और उससे पूछा, "इस टोकरी में क्या है? मुझे दे दो मैं देखना चाहता हूँ।" योगीराज की आज्ञा का पालन करते हुए शिकारी ने टोकरी को योगीराज के समक्ष रख दिया। योगीराज ने टोकरी को हाथ में लेकर फुटबाल की भांति एक किक (लात) मारी कि देखते-देखते सभी चिड़ियाएं फुर्र-फुर्र करके उड़ गयीं।

शिकारी ने सोचा यह सब कैसे हुआ? सभी मृत चिड़ियाएं कैसे उड़ गयीं। वह इस चमत्कार को योगीराज की कृपा जानकर उनके चरणों में गिर गया। अपने दुष्कर्मों के लिए क्षमा याचना करने लगा। उसने मन में हिंसा से सदैव दूर रहने का संकल्प किया और अपने शेष जीवन में शिकार से सदा के लिए मुंह मोड़ लिया।

गाँव जालूड़ में कुआं खुदवाना

योगीराज देवपुरीजी महाराज कैलाश आश्रम में विराजमान थे। तब किसी ने आकर प्रार्थना की, "हे कृपा सिन्धु! आपके पड़ौस के गाँव जालूड़ में पीने का पानी नहीं है। मनुष्य व पशु-पक्षी प्यासे मर रहे हैं। और आसपास के कुओं में खारा पानी है।"

लोगों की समस्या सुनकर योगीराज गाँव जालूड़ पहुँचे। आपके साथ कुत्तों एवम् सर्पों की फौज भी थी। योगीराज ने गाँव के बाहर एक वट वृक्ष के नीचे आसन लगाया। गाँव के लोग योगीराज के शुभागमन पर बहुत प्रसन्न हुए। सभी वर्गों के लोग आपके समक्ष उपस्थित हुए और अपनी समस्या योगीराज को बताई। योगीराज ने उनकी समस्या सुनकर आशीर्वाद देते हुए बताया कि "शीघ्र ही आप एक कुआं खोदना प्रारम्भ करो। तीन दिन के अन्दर यहाँ मीठे पानी की अथाह धारायें फूट पड़ेंगी।" ऐसा कहते हुए योगीराज एक फीता लेकर कुएं के लिए जमीन नापकर बताने लगे। फिर क्या था? देखते ही देखते अनेक लोग इस कार्य में जुट गये। मात्र चौबीस घण्टों में एक गहरा कुआं खुद गया था। देखते ही देखते उसमें अमृत तुल्य मीठा पानी निकल आया। मीठा पानी देखकर लोग खुशी के साथ योगीराज की जय-जयकार करने लगे। इसके पश्चातयोगीराज ने आस-पास के गाँवों से कुशल कारीगरों, मिस्त्रियों एवं मजदूरों को बुलाकर उस कुएं को पक्का बनवा दिया। वह कुआं अब भी मौजूद है।

अक्षय तृतीया को विवाह का आशीर्वाद

योगीराज प्रात:काल जंगल की ओर जा रहे थे। उसी गाँव (कैलाश) के एक हरिजन ने उन्हें देखकर प्रणाम किया। योगीराज ने उस हरिजन को आशीर्वाद दिया, "आनन्द करो बच्चा, इस अक्षय तृतीया को तुम्हारा विवाह हो जायेगा।" यह वचन सुनकर हरिजन स्तब्ध रह गया। हरिजन ने कहा, "यह कैसा आशीर्वाद दे दिया? गुरुदेव मैं तो शादीशुदा हूँ, मेरे पाँच बच्चे हैं और दूसरी शादी करने की इच्छा भी नहीं है। फिर आपका यह आशीर्वाद......?"

"मैं जानता हूँ बच्चा। इस समय जो तेरी अर्द्धांगिनी है, उसका जीवन परसों प्रात: चार बजे तक ही है। फिर वह तुम्हें व तुम्हारे बच्चों को छोड़कर स्वर्ग चली जायेगी। अत: तुम्हारे परिवार की भलाई के लिए ही मैंने यह आशीर्वाद तुम्हें दिया है। " योगीराज ने आत्मविश्वासपूर्वक उस हरिजन को पूरी स्थिति से अवगत कराया। योगीराज के वचनों के

अनुसार ही उस हरिजन की पत्नी पूरे परिवार को रोता-बिलखता छोड़ स्वर्ग में चली गयी। पूरे परिवार में शोक का वातावरण हो गया। कुछ ही दिनों के पश्चात ठीक अक्षय तृतीया को उस हरिजन का पुन: विवाह हो गया। यह चमत्कार देखकर वह हरिजन योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज से बहुत प्रभावित हुआ। इसके बाद वह रोज प्रात: योगीराज के आश्रम जाता ही रहता था।

भगवान्शंकर से महाप्रभुजी का दीक्षा ग्रहण करना

कुछ समय बाद परम योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज अपने कुत्तों, गायों, भेड़, बकरियों, सर्पों व घोड़े इत्यादि पालतू जानवरों को लेकर बड़ी खाटू के पहाड़ों में विराजमान हो गये।

बड़ी खाटू व छोटी खाटू की प्रजा और राजा आदि योगीराज के दर्शनार्थ पहाड़ों पर आने लगे। सभी लोगों को योगीराज के व्यक्तित्व से भय लगता था, अत: सभी लोग केवल दर्शन करके चले जाते थे। कोई भी व्यक्ति वहाँ पर ज्यादा देर तक नहीं रुकता था।

भगवान्श्री दीपनारायण महाप्रभुजी अपनी गायों को चराते हुए उस स्थान पर पहुँच गये, जहाँ पर स्वयं शिव एवम् योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज समाधि में लीन थे। महाप्रभुजी ने उनको साष्टांग दण्डवत प्रणाम किया।

उस समय योगीराज ने आँखें खोली और मधुर मुस्कान भरी दृष्टि से महाप्रभुजी की ओर देखा। कुछ समय के लिए दोनों विभूतियों की नजरें मिलीं। आंखों ही आंखों में मौन वार्तालाप हुआ। एक जोड़ी आंखें श्रद्धा से नम थीं तो दूसरी जोड़ी आंखें कुछ देने के लिए आतुर थी। उस अलौकिक छवि का वर्णन शब्दों में करने मैं असमर्थ हूँ।

श्री महाप्रभुजी ने योगीराज की सात बार परिक्रमा की और नम्र भाव से परम योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज के समक्ष विराजमान होकर सुमधुर राग में स्तुति करने लगे-

ॐ नमस्ते श्री गुरु, देवपुरी दयालम्।
निजानन्द, आनन्द, माया के आलम्॥

शरीरं अखंडं हरि रूप जासे।
अतीतं अनादि, निराकार भासे॥

अगम अजोनी, अपार अलिप्तम्।
स्वरूपम् सुशुद्धम्, सदा योगी जप्तम्॥

नमो सर्वव्यापी, गुणातीत देवा।
सदा स्वामी दीप, करे चरण सेवा॥

उक्त स्तुति सुनकर महायोगीराज श्री देवपुरीजी महाराज अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहने लगे, "हे विश्व दीप! मैं और तुम एक हैं। मात्र शरीर अलग-अलग हैं। तुम स्वयं शुद्ध स्वरूप, सच्चिदानन्द मूर्ति हो, इतने पर भी सत्य सनातन धर्म मर्यादा का पालन करना महापुरुषों का धर्म है। ऐसा कहते हुए पूर्ण कृपा एवम् आशीर्वाद युक्त गुरुदेव अपना वृहद्‌हस्तकमल श्री महाप्रभुजी के मस्तक पर धरा। फिर श्री महाप्रभुजी को कहा, "अहं ब्रह्म अस्मि", "एको ब्रह्म-द्वितीयोनास्ति" के अमर मंत्र की दीक्षा प्रदान की। श्री महाप्रभुजी ने योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज की पूजा व अर्चना की। तथा यह भजन सुनाया-

भजन (पद राग सोहनी)

धन्य-धन्य हो ऐसा भाग सिकन्दर।
दर्शन दिया हो सायब, बाहर अन्दर॥टेर॥

ज्ञान विज्ञान स्वरूप स्वच्छन्दर।
बिराजिया दिल मन्दिर अन्दर॥ १॥

ब्रह्मा हो नन्द आनन्द जैसा इन्दर।
होत प्रकाश, पूनम का हो चन्दर॥ २॥

अचल उजास भया दूर गई धुन्दर।
मन मोहन हरि हो, आप मुकन्दर॥ ३॥

सतगुरु सायब, देवपुरीजी।
श्री स्वामी हो दीप स्वरूप है सुन्दर॥ ४॥

भजन (पद राग बड़ो आसा)

साधो भाई महामन्त्र हम पायो।
ब्रह्मा पायो रे विष्णु पायो रे, शिव शंकर खुद सदायो॥ टेर॥

ईश्वकूल सूर्य पायो, महाराजा मनु सद वायो।
राजा रघु दशरथ जन पायो, मुनि वरिष्ठ सद दायो॥ १॥

रामचन्द्र, विश्वामित्र पायो, सप्तऋषि सद दायो।
गोरखनाथ, नवनाथा पायो, श्री पूज्य दत्त सदायो॥ २॥

नारद-शारद, शेष जी ने पायो, कालू कीर सद दायो।
पारासुर सारासुर पायो, वेद व्यास सद दायो॥ ३॥

मुनि शुकदेव जनक विदेही, अष्टावक्र सद दायो।
अर्जुन कृष्ण मेहरम कर पायो, श्री शंकराचार्य सद दायो॥ ४॥

अनन्त कोट ऋषि-मुनि भक्त जन, साधक सिद्ध सद दायो।
सतगुरु सायब देवपुरीजी, स्वामी दीप पद पायो॥ ५॥

यह भजन सुनाकर श्री महाप्रभुजी ने योगीराज से निवेदन किया कि "हे गुरुदेव! आप हमारे घर पधारने की कृपा कीजिये। मेरे माता-पिता आपके दर्शन कर पावन होंगे।" योगीराज ने श्री महाप्रभुजी के निवेदन को स्वीकार किया। और दोनों विभूतियाँ गाँव हरि वासणी की ओर चले।

गाँव हरि वासणी में दोनों विभूतियों के दर्शन कर महन्तजी श्री स्वामीजी उदयपुरीजी महाराज अति आनन्दित हुए। उन्होंने दण्डवत् प्रणाम कर दोनों ही विभूतियों को पवित्र आसनों पर विराजमान किया। महन्तजी प्रार्थना व पूजा स्तुति करके कहने लगे, "आज मेरा जीवन धन्य हो गया। मेरी आँखों के सामने साक्षात् हरि और हर विराजमान हैं। हमारा गाँव, हमारा देश, सभी आपके पधारने से पवित्र हो गये।" उन्होंने दोनों विभूतियों को भोजन कराया। कुछ समय बाद महालक्ष्मी श्रीमती चन्दन देवी ने साष्टांग प्रणाम किया, फिर इनके चेहरे की ओर देखा। वे विस्मय में पड़ गयीं। यह चेहरा उन्हें कुछ जाना-पहचाना लगा। उन्हें आभास हुआ, जैसे पहले भी कभी योगीराज को देखा है। तभी स्वयं योगीराज ने कहा, "मातेश्वरी, आप जो सोच रही हैं वह सत्य है। मैंने महाशिवरात्रि के शुभावसर पर आपको ध्यानावस्था में दर्शन दिये थे। उस समय मैंने आपसे कहा था। मैं एक ईश्वरीय विभूति के साथ शीघ्र ही आपसे मिलूंगा। मैं वही शिव हूँ। यह ईश्वरीय विभूति यह विश्वदीप है। आप किसी प्रकार का भ्रम न करें।"

गुरुदेव के इन वचनों के साथ ही मातेश्वरी का भ्रम दूर हो गया। उन्होंने मन में सोचा "वास्तव में वही चेहरा, वही रूप, सब कुछ वही है। यह वही कैलाशपति हैं, जिनके आशीर्वाद से हमारे घर में प्रभु का अवतार हुआ है। आज मेरा अहोभाग्य है जो साक्षात् शिवजी हमारे घर पधारे हैं।" ऐसा सोचकर उन्होंने योगीराज के चरणों में पुन: प्रणाम किया। तत्पश्चात् चरणामृत लेकर अपने सभी बच्चों व परिवार जनों को वितरित किया। स्वयं मातेश्वरी ने चरणामृत पान करके अपने अहोभाग्य की सराहना की। उस दिन बड़ा आनन्दमय वातावरण रहा। श्री देवपुरीजी महाराज ने रात्रि विश्राम भी

वहीं पर किया। रातभर सत्संग व रात्रि जागरण चलता रहा।

भजन

जय मातेश्वरी जय देवी चन्दन। विश्व दीप ज्योति, घर तेरे नन्दन॥
धन्य दीप प्रभु, धन्य मातेश्वरी। तेरे स्मरण से होय दु:ख भंजन॥
आप ही आदि अनादि मैया। सब ही देव करे नित्य वंदन॥
ऋषि, मुनि अवतार जपे नित। तेरी कृपा से कटे जग बन्धन॥
मुझ पर मेहर करो मेरी मैया। दर्शन देय हरो भव बन्धन॥
श्रीदीप ज्योति, है आपका नन्दन। बाल मुकन्द जगत सुख कन्दन॥
"माधवानन्द" पर नजर निहारो। पापों के पहाड़ करो सब खण्डन॥

श्री महाप्रभुजी की योग्य शिष्य परीक्षा

पूज्य श्री महाप्रभुजी कई दिनों तक श्री देवपुरीजी महाराज के सान्निध्य में खाटू के पहाड़ों पर ही योग साधना करते रहे। एक बार अवधूत एवं सिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने आपको प्रात: जल्दी प्रसाद लेकर आने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार श्री महाप्रभुजी प्रसाद लेकर आये और दाहिने हाथ की हथेली पर रखकर गुरुदेव योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज को प्रस्तुत किया। उस समय योगीराज ने महाप्रभुजी का हाथ पकड़ लिया। तत्काल चाकू निकाल कर उनके हाथ में जगह-जगह पर घाव करने लगे। देखते ही देखते खून के फव्वारे फूट गये। गुरुदेव योगीराज ने दूसरे दिन भी महाप्रभुजी को प्रसाद लेकर आने को कहा। तदन्तर श्री महाप्रभुजी मठ में पधारे और दाहिने हाथ में पट्टी भी बांधी। गुरुदेव की आज्ञानुसार आप दूसरे दिन फिर गाँव से प्रसाद लेकर गुरुदेव के पास पहुँचे। महाप्रभुजी ने योगीराज को दण्डवत् प्रणाम किया और बायें हाथ से प्रसाद गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया। तब गुरुदेव योगीराज ने महाप्रभुजी का बायाँ हाथ पकड़कर उस पर भी चाकू से कई घाव कर दिये। यह हाथ भी खून से रंग गया।

इसके पश्चात योगीराज ने महाप्रभुजी के चेहरे की ओर देखा। उनके चेहरे पर अभी तक वही मुस्कान थिरक रही थी। तब गुरुदेव ने कहा; "हे दीप! यह तुम्हारी प्रथम परीक्षा थी। मैंने तुम्हें कोई दण्ड नहीं दिया, बल्कि ऐसा करके मैंने तुम्हारे हाथों में वो शक्ति भर दी है कि जिससे तुम जिस किसी मनुष्य के सिर पर हाथ रखोगे वह मनुष्य सभी दुखों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करेगा। वह व्यक्ति एक अलौकिक आनन्द और परम शान्ति अनुभव करेगा।" इसलिए मैंने तुम्हारे साथ ऐसा किया है। गुरुदेव के ऐसे वचनों को सुनकर श्री महाप्रभुजी ने कहा कि "हे गुरुदेव, आप सदैव लोगों की भलाई

करते हैं। इसमें हम सभी की भलाई निहित है। तभी तो मैंने देखा कि तेज चाकू से आपने मेरे हाथों पर घाव किये लेकिन दूसरे ही दिन वे घाव साधारण उपचार से ही बिल्कुल ठीक हो गये।" इस घटना के पश्चात् श्री गुरुदेव योगीराज ने श्री महाप्रभुजी को तीसरे दिन भी प्रात: फिर प्रसाद लेकर आने का आदेश दिया। गुरुदेव की आज्ञा पाकर श्री महाप्रभुजी तीसरे दिन भी प्रात: प्रसाद लेकर गुरुदेव के समक्ष प्रस्तुत किया। श्री महाप्रभुजी ने गुरुदेव योगीराज को दण्डवत् प्रणाम किया तथा उनके सामने बैठ गये। इस पर देवपुरीजी महाराज ने मुस्कुराते हुए कहा, "दीप, तुम शायद डर गये।" गुरुदेव के वचन को सुनकर महाप्रभुजी बोले, "गुरुदेव आपके पास डर कैसा? यहाँ आकर तो प्रत्येक व्यक्ति डर से मुक्त हो जाता है। फिर मैं तो आपका सेवक हूँ।" इससे प्रसन्न हो श्री देवपुरीजी महाराज ने श्री महाप्रभुजी से कहा, "दीप मैं तुम से बहुत खुश हूँ। तुम जो चाहो वो मुझसे माँगो।"

तब श्री महाप्रभुजी ने निवेदन किया, "हे गुरुदेव! आप आपके निर्गुण तथा सगुण दोनों स्वरूपों साक्षात् आत्मज्ञान तथा भीतर बाहर आत्मप्रकाश मुझे दे दीजिये।"

सिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज के पास में एक भाला था। वे उस भाले को थामकर खड़े हो गये और श्री महाप्रभुजी की पीठ मेरुदण्ड की हड्डियों के बीच में जोर से भाला दे मारा। नुकीला भाला महाप्रभुजी की पीठ में तीन इन्च अन्दर घुस गया। पीठ से रक्त की तेज धाराएं फूट पड़ी। इतनी कठोर परीक्षा में भी श्री महाप्रभुजी सफल हो गये। उनके चेहरे पर अभी भी वही मुस्कुराहट थी। आँखों में सफलता की चमक थी। श्री महाप्रभुजी की पीठ में भाला पिरोये सिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने सुमधुर वाणी में कहा, "वाह दीप! तुम सचमुच महान्शक्तिशाली हो। एक दीप आकाश में सूर्य चमकता है जो पूरे संसार को प्रकाश देता है। दूसरे विश्वदीप सूर्य तुम हो। देखो तुम मोहमाया अन्धकार में भटकते प्राणियों को अभयदान व आत्मज्ञान देने में समर्थ हो। ऐसा वरदान देकर उन्होंने उस नुकीले भाले को पीठ से बाहर निकाल लिया। खून को रोकने के लिए योगीराज ने एक कपड़ा जलाकर उसकी राख को महाप्रभुजी के घाव पर लगा दिया और खून बहना बन्द हो गया। कुछ ही समय पश्चात गुरुदेव खाटू की पहाड़ियों में अदृश्य हो गये। श्री महाप्रभुजी ने विचार किया कि कृपानाथ श्री सतगुरु देव की आज्ञा के बिना मैं कहीं भी नहीं जाऊंगा। यह निश्चय करके श्री महाप्रभुजी तीन दिन तक लगातार एक ही आसन पर विराजमान रहे। पीठ का घाव अब बिल्कुल ठीक हो गया था। इस घाव का निशान उनकी पीठ पर आजीवन रहा। तीन दिन बाद अचानक ही श्री देवपुरीजी महाराज पुन: प्रकट हुए। उन्होंने श्री महाप्रभुजी से कहा, "दीप अब तुम कहीं एक जगह पर स्थान बनाकर रहो। सर्व रिद्धि-सिद्धि तुम्हारे आधीन रहेंगी।" तब महाप्रभुजी ने कहा, "हे गुरुदेव! आप जैसे सिद्ध योगीराज के चरण कमल जहाँ होंगे, वही आपके चरणों की धूल मेरे लिए सर्वस्व होगी।"

इसके पश्चात् सिद्ध योगीराज व श्री महाप्रभुजी ने प्रस्थान किया।

भगवा ध्वज

गाँव कचरास के पास तालाब से पूर्व की ओर श्मशान डूँगरी (पहाड़ी) नाम से विख्यात थी। वह जगह अत्यन्त डरावनी एवं भयानक थी। वहाँ आसपास रहने वाले लोगों की यह मान्यता थी कि इस श्मशान डूँगरी पर जिन्न, भूत-प्रेत आदि रहते हैं। वहाँ पर दिन के समय भी मनुष्य नहीं जाते थे। वहीं पर जाकर सिद्ध योगीराज खड़े हुए और कहने लगे, "दीप, यह जगह तुम्हारे लिए उपयुक्त है। तुम्हें इस स्थान को शाप मुक्त करना होगा। इस स्थान पर आने में लोगों में भय बना हुआ है। अत: तुम्हें उन सभी व्यक्तियों को अभयदान देना है।" यह कहते हुए सिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज ने आश्रम के लिए भगवा झण्डा गाड़ दिया। उस समय श्री महाप्रभुजी ने आत्म अनुभव से यह भजन श्री गुरुदेव योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज को सुनाया।

"भगवा ध्वज" — एक भजन

है निशान भगवा हिन्द का, पूजनीक आदि अनादि।
पूजनीक आदि अनादि, सतगुरु शिव शंकर की गादी।। टेर।।

सुरति और स्मृति गाँवें, कहते हैं ब्रह्मवादी।
प्रकट हैं प्रमाण वेद में, भिन्न-भिन्न कर समझादी।। २।।

वन्दनीय विश्व का कहिये, त्याग प्रतीक हैं आदी।
साक्षीरूप सत्य सुख राशि, यह साँची बात बतादी।। ३।।

भाग्यशाली भगवा की छाया, आवत हैं सत्यवादी।
अधम जीव नहीं जान सके हैं, भूल गया सत्यवादी।।४।।

श्री पूज्य भगवान्देवपुरीजी, अनुभव अगम लगा दी।
श्री स्वामी दीप इष्ट हैं आदि, सतगुरु चरण शरण प्रसादी।। ५।।

यह भजन सुनकर सिद्ध योगीराज श्री देवपुरीजी महाराज मंत्र मुग्ध हो गये। अति प्रसन्नतापूर्वक कहने लगे, "दीप, यहीं पर तुम्हारा आश्रम बनना चाहिए।" इतना कहकर श्री देवपुरीजी महाराज ने कैलाश की तरफ प्रस्थान कर दिया।